ORIGINAL RESEARCH PAPER

History

KEY WORDS:

जयप्रकाश नारायण व समाजवाद

प्रीति शोधार्थी, आई.जी.यू. मीरपुर, रेवाड़ी, इतिहास विभाग

प्रमुख स्वाधीनता संग्रामी, समाजवाद आन्दोलन के प्रसिद्ध नेता जयप्रकाष का आजादी के बाद भी लोकतंत्र से बहुत गहरा सम्बन्ध रहा है। सिताब दियारा व पटना में आरम्भिक षिक्षा के बाद उच्च षिक्षा के लिए जयप्रकाष नारायण जी सात साल तक अमेरिका में रहे। इस दौरान मार्क्स के विचारों से वे बहुत प्रभावित हुए। यह दौर अमेरिका में मार्क्सवादियों का दौर था। जब वे अमेरिका से भारत लौटे उस समय भारत में कई आजादी के लिए राष्ट्रीय स्तर के आन्दोलन चलाये जा रहे थे। इन सभी आन्दोलनों ने जयप्रकाष को भी अपनी ओर आकर्षित किया। इस दौरान जयप्रकाष जी की मुलाकात महात्मा गाँधी जी से हुई। वे देष को आजाद करवाने के लिए कांग्रेस से जुड गए व कांग्रेस को मजबूत करने के लिए कार्य करने लगे। सन् 1934 में उन्होंने कुछ अपने जैसे विचार रखने वाले कांग्रेस के साथियों के साथ मिलकर कांग्रेस में ही ''कांग्रेस समाजवादी दल'' की स्थापना की। उसके कुछ समय बाद जयप्रकाष नारायण को अंग्रेजी सरकार ने उनकी बढती हुई लोकप्रियता को देखते हुए जेल में डाल दिया। परन्तु 1942 में दिवाली की रात सत्रह फीट ऊँची दीवार को फाँदकर बाहर निकलना उनका देष के प्रति समर्पण भाव ही दर्षाता है।

जयप्रकाष जी ने अपने उग्र और तेजस्वी विचारों से जनता के दिलों में अपनी जगह बना ली। जयप्रकाष देष को स्वतंत्र करवाने वाले प्रमुख सिपाही रहे हैं। ब्रिटिष समाजवादी नेता ''रैमजे मैक्कोनाल्ड'' के अनुसार समाजवाद के विकास के इतिहास का परिषीलन करने के लिए जिन चरित्रों का अवलोकन करना होगा उनमें जयप्रकाष का स्थान सबसे आगे है।[1] महात्मा गांधी जी जयप्रकाष को भारत में समाजवाद का प्रसिद्ध व अधिकृत विद्वान मानते थे। गांधीजी के शब्दों में ''जयप्रकाष नारायण सामान्य कार्यकर्ता नहीं हैं'' वे समाजवाद के अधिकारी हैं। हम यह कह सकते हैं कि पाष्चात्य समाजवाद के सम्बन्ध में जो वे नहीं जानते वह भारत में कोई नहीं जानता।[2] 1934 में कांग्रेस में रहते हुए समाजवादी दल की स्थापना की गई। जयप्रकाष नारायण समाजवादी दल के महामन्त्री थे। इस समाजवादी दल में प्रमुख तौर पर समाज के अन्य नेता श्री नरेन्द्र देव अच्युत पटवर्धन, अषोक मेहता, मीनू मसानी का बहुत अधिक योगदान था। दल की नीति एवं कार्यक्रम की जयप्रकाष ने अपनी रचना ''समाजवाद क्यों? में बहुत अधिक विस्तार से चर्चा की है। जयप्रकाष का मत था कि भारत में वे और उनके सभी मार्क्सवादी साथी मार्क्स के विचारों का सच्चा व सम्पूर्ण प्रतिनिधित्व करते हैं न कि साम्यवादी'' जबकि जयप्रकाष नारायण ने आगे चलकर अपना समस्त जीवन ''सर्वोदय'' को अर्पित कर दिया था। इससे लेकिन उनके समाजवादी विचारों के महत्व पर कोई प्रभाव नहीं पडता।[3]

जयप्रकाष ने अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक ''समाजवाद क्यों? (Why Socialism?) के प्रारम्भ में बताया है कि समाजवाद एक व्यक्तिगत विचार व आरचरण संहिता न होकर सामाजिक संगठन की एक प्रमुख प्रणाली है तथा सामाजिक संगठन का उद्देष्य यह है कि सभी जीवन की विशमताओं को कम करके जीवन की मुख्य वस्तुओं का असमान वितरण को समाप्त किया जाए, उस प्रणाली को समाप्त किया जाए जिसमें अधिकांष व्यक्ति गरीबी, भूख, गन्दगी, रोग एवं अज्ञान का जीवन बसर करते हैं और कुछ समाज के व्यक्ति अपने प्रभाव के कारण आराम, भोग–विलास व सत्ता का आनन्द उठाते हैं।'' जयप्रकाष जी आधुनिक सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र के आमूल परिवर्तन के पक्ष में थे। उन्होंने बताया कि समाजवादियों की मुख्य समस्या समाज को असमानता व विषमताओं के अभिषापों को मिटाया जाए। समाजवाद का उद्देष्य समाज में प्रत्येक व्यक्ति को उसका हक दिलाना है। जयप्रकाष जी की दृष्टि में समाजवाद 'आर्थिक और सामाजिक पुनर्निर्माण का सिद्धांत है। जयप्रकाष जी का मुख्य उद्देष्य उत्पादन के साधनों से मुट्ठी भर लोगों के व्यक्तिगत अधिकारों से मुक्त करवाना था। यदि ये साधन समान रूप से सभी को उपलब्ध करवा दिए जाएं तो जो हमारे समाज में गरीबी व आर्थिक विषमताएँ बढी है। वह समस्या समाप्त हो जाएंगी परन्तु उसके लिए जनसंख्या वृद्धि की सीमा निष्चित सीमा से आगे न बढे।[4]
मई 17, 1934 को जयप्रकाष नारायण ने समाजवादी सम्मेलन का पटना में बहुत बडा आयोजन किया। इसकी अध्यक्षता भारत माँ के सच्चे सपूत नरेन्द्र देव आचार्य को सौंपी गयी। बहुत तथ्यों पर नजर डालें तो यह सम्मेलन आज भी राजनैतिक इतिहास के पन्नों में बहुत सफल सम्मेलन रहा। जो इस सम्मेलन का मुख्य लक्ष्य था। यह उसमें सफल रहा। जयप्रकाष जी इस सम्मेलन के महासचिव थे। अतः देष के विभिन्न स्थानों में दलगत इकाइयां स्थापित करने के उद्देष्य से समस्त भारतवर्ष का दौरा किया। कई जगह पर उन्होंने गरीब किसानों व मजदूरों को समाजवादी दल के कार्यक्लापों के बारे में बताया। 1934 दिसम्बर में कांग्रेस समाजवादी दल का अधिवेषन महानगर बम्बई में आयोजित किया गया। इसकी अध्यक्षता श्री सम्पूर्णानन्द ने की। बम्बई अधिवेषन समाजवादी दल का पहला अधिवेषन था। इसके पष्चात् दूसरा अधिवेषन उत्तर प्रदेष के मेरठ जिले में जनवरी 1936 में हुआ। तीसरा अधिवेषन फैजपुर में 1937 में सम्पन्न हुआ। तीसरे अधिवेषन की अध्यक्षता स्वयं जयप्रकाष नारायण जी ने की।[5] 1940 में लोकनायक जयप्रकाष नारायण चाइबासा में एक समारोह में गये हुए थे। उन्होंने समारोह ने अपने एक भाषण के द्वारा अंग्रेजी सरकार पर हमला किया। जिसमें उन पर सरकार के प्रति जन शक्ति को भड़काने के आरोप में उन्हें जेल में डाल दिया गया। गिरफ्तार करके उन्हें जमषेदपुर जेल में ले जाया गया था। लेकिन कुछ समय पष्चात् उन्हें हजारीबाग की जेल में कैद कर दिया गया। जयप्रकाष जी की गिरफ्तारी से आम जन व समकालीन नेता महात्मा गांधी, पण्डित जवाहरलाल नेहरू में बहुत रोष था। उस समय जयप्रकाष जी के विषय में गांधीजी ने एक लेख लिखते हुए जयप्रकाष नारायण को ''समाजवाद का आचार्य'' और एक ''जन्मजात योद्धा'' बताया। गांधीजी ने ये भी लेखक में लिखा अंग्रेजी सरकार की जितनी यातनाएं इस देष भक्त ने सही उतनी किसी ने नहीं।[6]

जयप्रकाष नारायण स्वतंत्रता के अर्थ को बहुत गहराई से समझते थे। वे अंग्रेजी शासन के प्रभाव से मुक्त होना ही स्वतंत्रता का लक्ष्य नहीं मानते थे। उनका मानना था कि समाज में आर्थिक स्वतंत्रता आये। तभी समाज स्वतंत्र होगा। इसलिए मार्क्सवादी क्रान्ति का विचार उन्हें गांधीवादी पद्धती की तुलना में स्वतंत्रता प्राप्ति का निष्चित एवं शीघ्रगामी पद्धती प्रतीत हुई थी। उनका यही लक्ष्य बन गया था कि शोषण और गरीबी से मुक्ति बिना राजनैतिक स्वतंत्रता का कोई मूल्य नहीं है। उसी समय सोंवियत रूस में लेनिन के नेतृत्व में बोलषविक पार्टी को सफलता मिली जिसे वहां सर्वहारा वर्ग को नेतृत्व प्राप्त हुआ। इसलिए जयप्रकाष नारायण को मार्क्स के सिद्धान्त पर चलने के लिए और अधिक प्रबलता से लेकर चलने का विष्वास बढा। वे भारत में चल रहे सविनय अवज्ञा आन्दोलन को सम्पत्तिवान वर्ग व सम्पन्न वर्ग के हितों में संचालित मानते थे। भारतीय साम्यवादी दल लम्बे समय तक सोंवियत साम्यवादी दल के निदष पर कार्य करता था। उसकी अपनी कोई नीति व विचारधारा नहीं थी। जयप्रकाष नारायण को इस बात ने बहुत परेषान व निराष किया। जयप्रकाष नारायण स्वतंत्रता प्राप्ति को बहुत अधिक महत्व देते थे। उनका यह विष्वास था कि भारत में तत्कालीन परिस्थितियों में समाजवादी आन्दोलन को भारतीय साम्यवादी दल के नेतृत्व एवं कोमिनर्टान–साम्यवादी अन्तरराष्ट्रीय संगठन के मार्गदर्षन में नहीं चलाया जा सकता।[7] परन्तु इस बात से मना नहीं किया जा सकता कि जयप्रकाष नारायण लेनिन वादी परिवर्तन के पक्षधर थे। लेकिन स्तालिन से बहुत अधिक प्रभावित नहीं थे। वे सोंवियत रूस की साम्यवाद की व्यवस्था को सर्वाधिकारी शासन व्यवस्था मानते हुए। उसकी बहुत अधिक आलोचना करते थे। जयप्रकाष नारायण जी मार्क्सवाद व समाजवाद की लोकतन्त्र से अलग कल्पना तक नहीं करते थे। इस दल की लोकतांत्रिक समाजवाद में आस्था थी। यह दल समाज के हर वर्ग के लिए गरीबी अन्मूलन व स्वावलम्बी बनाने की लडाई लड रहा था। जयप्रकाष जी के दिमाग में एक अलग व्यवस्था का मनाचित्र था। वे अपनी सोच में शोषण व गरीबी को कोई स्थान नहीं देते थे। सभी व्यक्तियों को समान अवसर मिले। उत्पादन के संसाधनों व वितरण के साधन पर सभी का समान अधिकार हो। समाज के भौतिक एवं नैतिक स्त्रोतों का विकास किया जाए। समाज में कोई भी विषेष अधिकार प्राप्त वर्ग न हो। सभी की समान स्वतंत्रता होगी। इस व्यवस्था को स्थापित करने के लिए वे लोकतन्त्र के पक्षधर थे। यही सोच उन्हें हमेषा जन–जन के कार्य करने के प्रति प्रेरित करती रहीं।[8]

समाजवाद का अर्थ व कार्यक्रमः– जयप्रकाष नारायण की 1936 ई0 में एक पुस्तक प्रकाषित हुई। जिसका नाम था ''समाजवाद क्यों?'' इस पुस्तक के माध्यम से जयप्रकाष नारायण जी ने समाजवाद के उद्देष्यों को स्पष्ट करते हुए लिखा था कि आज समाजवाद की वर्तमान समय में कई विचारधारा प्रचलित हैं। उन्होंने लिखा कि समाजवाद के भी बहुत से सम्प्रदाय हैं। उन सभी के विचार एक दूसरे से भिन्न हैं। लेकिन विष्वष्युद्ध व फांसीवाद के कारण उनकी एकता बढी है। इस सन्दर्भ में लोकनायक जयप्रकाष जी ने लिखा कि '' आज यह कहना अधिक सम्भव है कि समाजवाद का केवल एक ही रूप है। वह है मार्क्सवाद'' [9]आज समाज में जितने भी समाजवादी समूह व उनकी विचारधारा है। उन सबकी स्थापना के तरीकों व समाजवाद क्यों की विचारधारा में धरातल पर बहुत अधिक अन्तर हैं। वे मार्क्सवाद के द्वारा ही समाजवाद की स्थापना के पक्षधर थे। वे केवल राजनैतिक स्वतंत्रता को नहीं मानते थे। वे हर गरीब–मजदूर के हितों की लडाई लडने के लिए उत्पन्न हुई विचारधारा को ही समाजवाद मानते थे। उनका कहना था कि समाज में उत्पादन व वितरण के संसाधनों पर सबका समान अधिकार हों। कोई भी विषेष वर्ग न हो। वे मार्क्सवादी समाजवाद में दोबारा से जमीनों का बंटवारा अर्थात् आर्थिक संसाधनों का भी बंटवारा होने का मानचित्र अपने दिमाग में रखते थे। वे कहते थे कि जब तक समाज का शोषित वर्ग शोषण से मुक्त नहीं होगा। जब तक समाजवाद की कल्पना करना भी मुष्किल है। आज समाज का ताना बाना कुछ ही व्यक्तियों के हाथों है। ये सब देखकर मार्क्सवाद के द्वारा ही समाजवाद प्राप्त करने की विचारधारा को सही माना था।[10]

कार्यक्रम

- देष के आर्थिक जीवन का राज्य द्वारा नियोजित और नियन्त्रित।
- उत्पादन के साधनों पर जनता का अधिकार।
- विदेषों के साथ होने वाले व्यापार पर राजकीय एकाधिकार की स्थापना।
- उत्पादन व वितरण के सभी साधनों का समाजीकरण प्रमुख उद्योगों जैसेः– इस्पात, पटसन, रेलवे, कपास, लगान व खदान, बैंक, बीमा और सार्वजनिक सेवाओं का राष्ट्रीयकरण।
- श्रम करने या पोषण पाने का अधिकार राज्य द्वारा मान्यता।
- किसानों एवं मजदूरों द्वारा लिए गए ऋणों का परिसीमन।
- राज्य द्वारा सहकारी एवं सामूहिक कृषि को प्रोत्साहित और उन्नति करना।
- किसानों के बीच भूमि का पुनः वितरण।
- राजाओं एवं जमीदारों तथा अन्य सभी शोषण वर्गों का बिना क्षतिपूर्ति के उन्मूलन।
- आर्थिक जीवन के समाजीकृत क्षेत्र में उत्पादन, वितरण और ऋण सम्बन्धी सहकारी संस्थाओं की स्थापना ।[11]

सन्दर्भः–

1. सामाजिक कान्ति के दस्तावेज, पेज न0. 704
2. दादा धर्माधिकारी द्वारा लिखित 'विभूति सम्पन्न विचार यात्रा' उधृत जयप्रकाष नारायणः मेरी विचार यात्रा – भाग–1, वाराणसी, सर्व सेवा संघ (1974) पृ0. 10
3. हरिजन : 16 मार्च 1940
4. जयप्रकाष नारायण राजनैतिक व सामाजिक विचार, पेज न0. 57
5. साप्ताहिक दिनमान दिनांक 21 अप्रैल 1974, पृ0. 18
6. लोकनायक बाबू जयप्रकाष, पृ0 संख्या 14
7. लोकनायक बाबू जयप्रकाष नारायण, पृ0 संख्या 31
8. दादा धर्माधिकारी द्वारा लिखित 'विभूति सम्पन्न विचार यात्रा' उधृत जयप्रकाष नारायणः मेरी विचार यात्रा – भाग–1, वाराणसी, सर्व सेवा संघ (1974) पृ0. 10
9. जयप्रकाष नारायण : समाजवाद क्यों? (अंग्रेजी संस्करण) अखिल भारतीय कांग्रेस समाजवादी दल (बनारस) 1936, पृ0. 1
10. जयप्रकाष नारायण : समाजवाद क्यों? (अंग्रेजी संस्करण) अखिल भारतीय कांग्रेस समाजवादी दल (बनारस) 1936, पृ0. 1
11. जयप्रकाष नारायण : प्रसाद बिमल लिखित, पेज न0. 36